महर्षि-प्रभा मासिक ई-पत्रिका

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालय

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव

07-12-2021 से 09-12-2021 तक

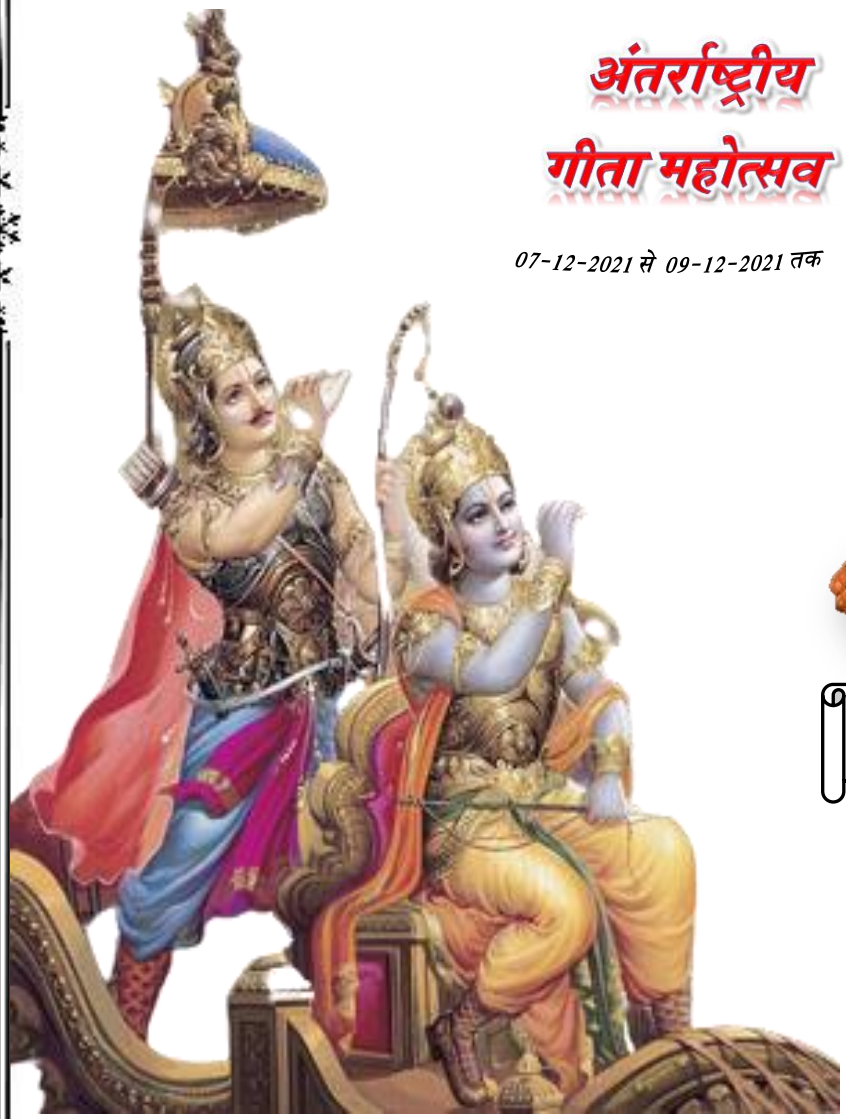

वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ।।

mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

अंक-४
माह – दिसम्बर
वर्ष २०२१
विक्रमी संवत् २०७८

ई-मेल - maharishiprabhamvsu@gmail.com

संरक्षक-
श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)
श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)
श्री कंवरपाल गुर्जर
(माननीय शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक-
प्रो. बृजकिशोर कुठियाल
(अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद्, हरियाणा)
प्रो. राजकुमार मित्तल (कुलपति)

प्रधान सम्पादक-
प्रो. यशवीर सिंह
(कुलसचिव)

सम्पादक-
डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय

सहसम्पादक-
डॉ. शशिकान्त तिवारी
डॉ. नरेश शर्मा
डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. शर्मिला

छात्र सम्पादक
रजनी
शीतल

कर्म और ज्ञान योग शास्त्र गीता

(अकर्मण्य को कर्मयोगी बनाने का ग्रन्थ गीता)

भारतीय संस्कृति और सभ्यता को विश्वपटल पर संस्थापित करने में जिन पुस्तकों ने अपना भव्य योगदान दिया है, उसमें 'गीता' का अप्रतिम स्थान है। गीता की विलक्षण इस बात से लगायी जा सकती है कि जब गीता गायी गई उस समय की परिस्थिति क्या थी ? इस पर दृष्टि डालना आवश्यक है। दुनिया के इतिहास में ऐसा एक भी उदाहरण नही मिल सकता जहाँ युद्ध की दुंदुभि: बज चुकी हो, दोनों सेनाएं युद्ध के लिए तैयार आमने सामने खडी हों। धनुष को हाथ में लिए एक योद्धा जगत ओर मोक्ष सम्बन्धी प्रश्न अपने सारथी से पूछ रहा हो तथा स्थित प्रज्ञ सारथी उन प्रश्नों का जबाव दे रहा हो ऐसे अद्भुत् दृश्य की सिर्फ कल्पना की जा सकती है।

भारत के इतिहास में ऐसी घटना घटित होती है, जब दो सेनाएं आमने - सामने युद्ध भूमि में युद्ध के लिए खडी हैं। जब अर्जुन अपने सामने अपने सगे सम्बन्धियों को देखकर युद्ध के बीचो बीच अपने धनुष बाण रख देता है और अपने सारथी से कहता है कि मैं युद्ध नहीं कर सकता मुझे नहीं चाहिए रक्त से सना हुआ हस्तिनापुर का राजसिंहासन। हे कृष्ण मैं युद्ध करने में समर्थ नही हूँ मेरे हाथ काँप रहे हैं मेरा गला सूख रहा है, मेरे हाथ से गांडीव गिरा जा रहा है। **'सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति।"**

गुरुनहत्वा हि महानुभावान्
श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरुनिहैव
भुञ्जीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान्॥

प्रश्न यह उठता है कि यहाँ अर्जुन को वैराग्य हुआ था या विषाद ? महाभारतकार अर्जुन की इस अवस्था को विषाद ही नही अपितु विषाद योग कहता है। यहाँ यह घटना अर्जुन में विषाद योग को दर्शाती है। यही घटना ऐसी है जो समाज और राष्ट्र जीवन के अपने कर्म में शिथिलता लाने वाले अर्जुनों को कर्म में जोडती है। इसीलिए इस पूरे शास्त्र को कर्म योग कहा गया है। यह कर्म योग शास्त्र जीवन के रहस्य को समझाता है। जो कर्म आपको बन्धन में डाले या बांधे रखे वह केवल कर्म कहलाता है, जो कर्म आपको जीवन के रहस्य को समझा दे वह कर्म योग कहलाता है। इसी प्रकार जो ज्ञान आपको पता है वह केवल ज्ञान है और जो ज्ञान आपके जीवन को बदल दे वह ज्ञान योग है। गीता हमें कर्म योग और ज्ञान योग दोनों का अर्थ समझाती है इसीलिए अर्जुन के विषाद को गीता में विषाद योग कहा गया है। जब अर्जुन जैसा योद्धा विषाद योग के स्तर को छू लेता है तब गीता जैसे ग्रन्थ का प्रादुर्भाव होता है।

महाभारत जैसे प्रबन्ध काव्य के बीचो बीच गीता है। यद्धपि महाभारत में अनेक गीताएं है। परन्तु कृष्ण और अर्जुन के युद्ध भूमि के मध्य में हुए संवाद को ही अधिक महत्त्व मिला। उसके दो कारण हैं, एक तो यह संवाद स्वयं भगवान कृष्ण और महाभारत के महानतम योद्धा (इसे हम नायक भी कह सकते हैं) के मध्य हुआ। दूसरा इसमें सम्पूर्ण मानव दर्शन मिलता है। कर्म, ज्ञान और भक्ति तीनों का समन्वित स्वरूप इसी गीता में मिलता है इसका प्रतिपादन स्वयं पद्मनाथ कृष्ण करते हैं इसलिए इसे भगवद् गीता कहा गया है। अट्ठारह अध्याय में लिखे गए महान प्रबन्धकाव्य में सर्वाधिक महत्त्व भगवद् गीता को मिला। यह स्थान मिलना भी स्वाभाविक था क्योंकि जिस घटना के साथ इसका सम्बन्ध है वह घटना भी कोई सामान्य घटना नही थी।

जिस धर्म की स्थापना के लिए इतने बड़े महायुद्ध का उपक्रम हुआ उस महायुद्ध या कहें कि धर्मयुद्ध का महानायक रणभूमि के मध्य ठीक उस समय विषाद युक्त हो जाए जिस समय आमने - सामने के योद्धाओं की तलवारे टकराने लगी हों, युद्ध का बिगुल बजने वाला हो। यह कोई सामान्य घटना नही थी। यह स्थिति प्रत्येक मनुष्य के अन्दर जीवन महाभारत में आती है। जब हम कर्तव्यविमूठ हो जाते हैं, उस समय बुद्धि रूपी सारथी हमें उस विषाद से बाहर निकालने का प्रयास करता है। यह शाश्वत प्रयास प्रत्येक कर्म योगी के मन में निरन्तर चलता रहता है। गीता प्रत्येक व्यक्ति की प्रत्येक युग की प्रेरणा है।

गीता कोई धार्मिक ग्रन्थ नही है वह एक प्रबन्धशास्त्र है। आज तो गीता एक व्यवसायिक ग्रन्थ के रूप में स्थान ले चुका है। गीता में मैनेजमेंट के फार्मूलों से लेकर नेतृत्व (लीडरशिप) के गुणों तथा व्यापार (Business) के सूत्रों की भरमार है। आज अनेक बडे - बडे व्यवसायिक प्रतिष्ठानों में विधिवत् गीता की कक्षाएं लगती हैं ताकि सभी कर्मचारियों के मन में बुद्धि का सन्तुलन रहे परस्पर आत्मीय भाव रहे। जब वे इस प्रकार का भाव रखेंगे तो उत्पादकता और गुणवत्ता दोनों श्रेष्ठ रहेगें। गीता लाभ - हानि तथा संकटों का सामना करने तथा उनसे उबरने की प्रेरणा देती है, आत्मिक बल प्रदान करती है। सबसे पहले जापान में इसका सफल प्रयोग हुआ। आज विश्व की बड़ी - बड़ी कम्पनियों के मुख्य अधिशास्त्री अधिकारी (CEO) और वरिष्ठ प्रबन्धक भगवत् गीता पर व्याख्यान सुनने के लिए एकत्र होते हैं। इसके लिए विधिवत् ट्यूशन ले रहे हैं। ताकि कम्पनी में सही और सन्तुलित निर्णय ले सकें।

गीता प्रत्येक कर्म क्षेत्र का शास्त्र है। वह विवेक का जागरण करता है। कर्म और ज्ञान का समन्वित रूप जीवन की सफलता की कुञ्जी है। इसी के आधार पर व्यक्ति अपने कार्य तथा कर्तव्य के प्रति भक्ति का निर्माण करता है। कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वित स्वरूप गीता है। इसी लिए कहा गया है।

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्र विस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्मातद् विनिस्सृता॥

प्रो. राजकुमार मित्तल
कुलपति

सम्पादकीयम्

मानवीयसंस्कृतेः जननी भारतभूमिः न केवलं भारतीयानां प्रिया वर्तते अपितु देवानामपि प्रिया वर्तते। समग्रेऽस्मिन् विश्वे अस्याः गौरवं प्रकाशितं वर्तते। ऋषिमुनीनां संस्कृतिरियं विश्वकल्याणाय स्वज्ञानामृतं प्रसारयति। एतस्याः निस्सृतो ज्ञानराशिः आसमुद्रपर्यन्तं समग्रे भुवने लोकान् प्रबोधयति। एतस्याः ज्ञानागाराः वेदाः उपनिषदः पुराणानि रामायणं महाभारतमित्यादयो ग्रन्थाः अन्यतमाः वर्तन्ते।

विश्वस्य श्रेष्ठतमप्रबन्धकाव्ये महाभारते विश्वस्य सर्वविधं ज्ञान - विज्ञानमुपलभ्यते। एतस्य ग्रन्थस्य एव भीष्मपर्वणः गीतायाः प्रादुर्भावोऽभवत्। भगवद्गीता अष्टादशअध्यायेषु सप्तशतं (७००) श्लोकेषु ज्ञान-भक्ति- कर्म- योग शास्त्रं विद्यते। भारतीयसंस्कृतेः मूलतत्त्वं गीतायां निबद्धमस्ति। गीताध्ययनानन्तरं शास्त्रस्य पठनस्य आवश्यकता न भवति यतो हि गीतायां सर्वं वर्णितमस्ति। अस्याः विषये उक्तमस्ति यत् -

गीता सुगीता कर्तव्या किममन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माभाद् विनिस्सृता॥

सर्वेषाम् उपनिषदां सारभूता वर्तते गीता। उपनिषत्सु वर्णितं समग्रं ज्ञानं साररूपेण गीतायां निबद्धमस्ति।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥

गीता भगवता श्रीकृष्णनेन धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे अर्जुनं प्रबोधयितुं प्रोक्तासीत्-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

गीता सर्वान् मानवान् निष्कामकर्म कर्तुमुदबोधयति यदा मानवः अकर्मण्यो भवति तदा गीता तं प्रबोधयति। कर्तव्यं प्रति-प्रेरयति।

गीतोपदेशस्य पवित्रभूमिः कुरुक्षेत्रं नातिदूरं वर्तते। प्रतिवर्षं गीतायाः उपदेशान् स्मर्तुं कुरुक्षेत्रे गीतामहोत्सवः आयोज्यते। अधुना अयमुत्सवः सर्वेषां कृते समग्रेऽपि हरियाणाराज्ये सम्मान्यते आयोज्यते च। "नमो भगवते वासुदेवायः"

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव

07-12-2021 से 09-12-2021 तक

गीता महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्ज्वल एवं वैदिक मंगलाचरण के साथ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय इन्द्रेश कुमार (राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) तथा मुख्यवक्ता के रूप में माननीय जयप्रकाश गौतम (अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, संस्कृत भारती) एवं सारस्वत अतिथि के रुप में श्री महेंद्र सिंह (प्रधान, श्री लवकुश महातीर्थ (ट्रस्ट) उपस्थित रहे।

गीता से सीखे जीवन जीने की कला – इन्द्रेश कुमार

सर्वप्रथम डॉ. रामानन्द जी, एवं डॉ. नवीन जी के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने गीता के 12वें अध्याय का वाचन किया। कार्यक्रम के मुख्यातिथि माननीय इन्द्रेश कुमार ने कहा कि भारतीय सनातन परम्परा को जब-जब विश्व ने पुकारा है तब-तब बस एक ही वाक्य बोला और सुना गया है- भाइयों एवं बहनों। भाई-बहन ईश्वरीय संबंध है। जीवन का सर्वोत्तम मूल्यवान् चरित्र है। भारतीय संस्कृति विश्व की शक्ति थी, है, और रहेगी। निष्ठा, आचरण एवं चरित्र का नाम भारतीय संस्कृति है। गीता सत्कर्म की प्रेरिका है। स्वार्थ से निस्वार्थ एवं निस्वार्थ से परमार्थ को ले जाने वाली गीता है।

जो गीता में लिखा है वह आचरण में भी आवश्यक है - जयप्रकाश गौतम

मुख्यवक्ता के रूप में उपस्थित श्री जयप्रकाश जी ने कहा कि बार-बार गीता पढ़ने से भी तृप्ति नहीं होती है, जो मनुष्य जैसा चाहता है वैसा कर्म करता है। जो गीता में लिखा है वह जीवन में होना चाहिए। जो आचार्य पढ़ाते हैं और जो विद्यार्थी पढ़ते हैं, उनकी विद्या ग्रहण करने की भावना श्री कृष्ण और अर्जुन के समान होनी चाहिए। जो गीता में लिखा है उसके अनुसार आचरण भी आवश्यक है। गीता हमें मान-सम्मान के साथ जीने का मार्ग दिखाती है। गीता के 200 से अधिक अनुवाद हुए हैं किंतु वास्तविक आचरण क्या है यह जानना अपेक्षित है।

उसके उपरान्त डॉ. देवेन्द्र के मार्गदर्शन में योग विभाग के विद्यार्थियों ने श्लोकध्वनि के साथ योग की सुन्दर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति जी ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि गीता में जीवन प्रबन्धन के बारे में विस्तृत रूप से लिखा गया है। उन्होंने कहा कि गीता में जीवन के हर क्षण के बारे में मार्गदर्शन मिलता है। गीता जीवन का प्रबंधन भी सिखाती है। सभी में समग्रता, संपूर्णता की दृष्टि प्रदान करती है, विवेक को बनाए रखती है। सभी के प्रति समभाव रखना आवश्यक है और सभी के लिए सोचने की दृष्टि भी आवश्यक है। अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह ने सभी गणमान्य अतिथियों तथा सामाजिकों का विश्वविद्यालय परिवार की ओर से धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय संस्कृत, संस्कृति एवं राष्ट्र संरक्षण के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना आवश्यक है। नवाचार के साथ विश्वविद्यालय संस्कृत का विकास करने का प्रयास करेगा। कार्यक्रम में मञ्च संचालन डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय, ने किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त आचार्य अधिकारी कर्मचारी एवं छात्रगण उपस्थित थे।

द्वितीय दिवस पर गीता आधारित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने प्रतियोगिताओं में भाग ग्रहण किया। इसके अन्तर्गत भाषण प्रतियोगिता, श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता तथा गीता प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। ***श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता*** के निर्णायक के रूप में विश्वविद्यालय के आचार्य डॉ. शशिकान्त तिवारी, डॉ. मदनमोहन तिवारी, डॉ. नवीन शर्मा, उपस्थित रहे जिसमें ***चैतन्य चिराग गर्ग (शास्त्री द्वितीय वर्ष)*** ने ***प्रथम स्थान*** प्राप्त किया। ***गीता प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता*** के निर्णायक डॉ. सुरेन्द्र पाल, डॉ. नरेश शर्मा, डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र जी रहे जिसमें बालक वर्ग में ***सुमेरचन्द (आचार्य व्याकरण-प्रथम वर्ष)*** तथा बालिका वर्ग में ***रजनी (आचार्य संस्कृत पत्रकारिता)*** ने ***प्रथम स्थान*** प्राप्त किया तथा ***भाषण प्रतियोगिता*** में निर्णायक के रुप में डॉ. रामानन्द मिश्र, डॉ. शीतांशु त्रिपाठी, डॉ. विनय गोपाल त्रिपाठी उपस्थित रहे जिसमें ***माधवी (आचार्य योग-प्रथम वर्ष)*** ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. देवेन्द्र तथा संयोजन डॉ. शीतांशु त्रिपाठी द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को महोत्सव के समापन अवसर पर पुरस्कृत किया जाएगा।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय एवं श्री लवकुश महातीर्थ (ट्रस्ट) मूंदड़ी के संयुक्त तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव कार्यक्रम का समापन दिनांक 09-12-21 को हुआ। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह ने भाग लिया। इन्होंने कहा कि भागवत गीता का ज्ञान ही हमें इस सांसारिक मोह - माया के बंधन से मुक्त कर सकता है। गीता का ज्ञान ही स्वयं को और सर्व शक्तिशाली ईश्वर को पहचानने का अवसर देता है।

इस अवसर पर कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड की तरफ से आर्ट एंड कल्चर एवं कला परिषद कुरुक्षेत्र, के द्वारा समारोह में सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। समारोह में देश भक्ति, संगीत, कविता गायन और श्री कृष्ण अर्जुन संवाद, हरियाणवी नृत्य, पंजाबी नृत्य की बहुत ही सुन्दर प्रस्तुति दी गयी।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के छात्र छात्राओं के द्वारा गीता-पाठ, योग की प्रस्तुति दी गई। योग गुरु भक्ति नाथ, रोड सभा के अध्यक्ष रामपाल, सूरजभान, महेन्द्र सिंह, रमेश कुमार, जयप्रकाश, सुन्दर, गुलाब सिंह व मून्दड़ी गाँव के सभी बच्चे, महिला-पुरुष, वृद्ध व संस्कृतविश्वविद्यालय के सभी छात्र-छात्रा आचार्यगण, अधिकारी, कर्मचारी उत्साहपूर्वक कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम की समापन कल्याण मन्त्र व प्रसाद वितरण करके किया गया।

दिनांक **05-12-2021** को आर.के.एस.डी महाविद्यालय संस्कृत विभाग की ओर से गीता जयंती उपलक्ष में एक प्रतियोगिता का कार्यक्रम किया गया जिसमें महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय की **संस्कृत पत्रकारिता** की छात्रा **शीतल** ने **द्वितीय स्थान** प्राप्त किया।

श्रीमद्भगवद्गीता में जीवन प्रबंधन

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्म पर्व में से ली गई है यह ज्ञानराशि विश्व की अमूल्य ज्ञान धरोहर है। महाभारत की रचना महर्षि वेदव्यास ने और लेखन भगवान श्री गणेश ने किया था। श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश भगवान श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र की धरा ज्योतिसर में अर्जुन को दिया, जो मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए अतीव उपयोगी सिद्ध होता है।

युद्ध के समय जब सेनाएं आमने-सामने खड़ी हो गईं तो अर्जुन के विषाद को दूर करने के लिए योगेश्वर श्री कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया जो आज भी व्यवहारिक जीवन की समस्याओं के लिए समाधान प्रदान करता है।

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ ! नैतत्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप ।।

(अध्याय २, श्लोक ३)

कायरता, कायरता होती है। चाहे वह करुणा जनित हो, या भय जनित। अतः अपने स्वत्व और अधिकारों की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। अन्याय का सदैव प्रतिकार करना चाहिए और पलायन नहीं पुरुषार्थ का चयन करना चाहिए।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।

(अध्याय २, श्लोक ४७)

केवल मनुष्य को ही यह सौभाग्य प्राप्त है कि वह नए कर्म करने के लिए स्वतंत्र है। जिससे उन्नति के शिखर पर आरूढ़ होकर उपलब्धियों के कीर्तिमान रचकर इतिहास में अद्वितीय स्थान प्राप्त कर सकता है। अतः अकर्मण्य नहीं, कर्मठता से कार्य करते रहना चाहिए।

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया।
विमृश्यैमदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ।।

(अध्याय १८, श्लोक ६३)

मंत्रणा और विचार-विमर्श तथा मार्गदर्शन भले ही सबसे लेते रहें, लेकिन निर्णय स्वयं की बुद्धि से लेना चाहिए। श्री कृष्ण ने अर्जुन को पूरा ज्ञान देने के अनन्तर यह स्वतंत्रता दी थी कि वह स्वविवेक से निर्णय ले और कार्य करे। पराश्रित नहीं, स्वआश्रित होने का आह्वान कर व्यक्ति को स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बनने का संदेश दिया है।

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।।

(अध्याय १७, श्लोक १५)

तप तीन प्रकार के बताए गए है- शरीर, वाणी और मन। तीनों का उपयोग लोकहित में करना चाहिए। वाणी मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र है। इससे व्यक्ति सारे संसार को अपना मित्र बना सकता है या शत्रु बना सकता है। अतः बोली की महत्ता, शब्दों का प्रभाव और वाणी को नियंत्रित और मर्यादित रखें।

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ।।

(अध्याय १६, श्लोक ४)

पाखंड, घमंड, अभिमान, क्रोध, कठोर वाणी और अज्ञान- इनसे मनुष्य को दूर रहना चाहिए। सदगुणों को अपने जीवन में उतारना चाहिए जिससे जीवन में परम शांति का अनुभव होता है।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः ।।

(अध्याय ४, श्लोक ३४)

सच्चा ज्ञान सरलता से नहीं मिलता क्योंकि केवल सूचनाओं को पढ़ कर ज्ञानी नहीं बना जा सकता। इसके लिए विशेषज्ञों के पास तथा विधा पारंगतों के पास विनम्रता और श्रद्धापूर्वक हमें जाना चाहिए। तभी सही लक्ष्य एवं वास्तविक शिखर स्पष्ट दिखाई देने लगेगा।

नहि ज्ञानेने सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

(अध्याय ४, श्लोक ३८)

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला दूसरा कोई साधन नहीं है।

श्रद्धावॉल्लभते ज्ञानं... **(अध्याय ४, श्लोक ३९)**

ज्ञान के प्रति जिज्ञासा होगी तभी ज्ञान प्राप्त होगा।

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति। **(अध्याय ४, श्लोक ३९)**

क्योंकि शांति साधनों से नहीं ज्ञान से प्राप्त होती है।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।। **(अध्याय ४, श्लोक ११)**

मनुष्य को व्यवहार करते समय बहुत सावधान रहना चाहिए क्योंकि जैसा व्यवहार करोगे, वैसा ही तुम्हारे साथ भी होगा।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।।

(अध्याय २, श्लोक ३७)

निर्भीक होकर कर्म करने से असफलता भी कीर्ति यश और मान दिलाती है। भयग्रस्त मन-मस्तिष्क से किए गए काम में सफलता मिल भी जाए तो वह सम्मानीय, वंदनीय नहीं हो सकती।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।।

(अध्याय २, श्लोक ५६)

आदर्श व्यक्तित्व वाला व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में विचलित नहीं होता। राग, भय, क्रोध- जब समाप्त हो जाते हैं तो व्यक्ति स्थिर बुद्धि वाला हो जाता है। तथा वह संकट और संतापों से प्रतिकूलता और अनुकूलता में संतुलन बनाए रखेगा।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।।

(अध्याय ६, श्लोक ५)

अपने उत्कर्ष एवं अपकर्ष के लिए मनुष्य स्वयं उत्तरदायी होता है। दूसरे का अहित किए बिना स्वयं का उद्धार अपने प्रयत्न और बुद्धि बल से करना चाहिए। क्योंकि मनुष्य आप ही अपना मित्र और आप ही अपना शत्रु है।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।

(अध्याय ९, श्लोक २२)

यह एक व्यवहारिक सत्य है। जो व्यक्ति अपने स्वामी की कृपा का चिंतन करते हुए पूरी सत्यता और निष्ठा से काम करता है उसे स्वामी का पूर्ण संरक्षण मिलता है और स्वामी सदैव उसकी सुख-सुविधा का ध्यान रखता है।

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।

(अध्याय ६, श्लोक ३५)

किसी भी संकल्प को पूरा करने के लिए मन का स्थिर और अचल होना आवश्यक है। उद्देश्य प्राप्ति के लिए हमें निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए तथा सभी प्राणियों के प्रति कल्याण की भावना रखनी चाहिए।

ये तीनों सूत्र तीन महा मंत्र हैं। जिनके आचरण करने से व्यक्ति और समाज शांत और सुखी रहेगा। क्योंकि बैर-भाव, राग-द्वेष सारे झगड़े-फसाद की जड़ है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।।

(अध्याय ४, श्लोक ७, ८)

दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं- सज्जन और दुर्जन। जब तक सज्जन जागरुक और सक्रीय होते हैं तब दुष्ट अपनी दुष्ट प्रवृतियों से समाज को त्रस्त नहीं कर पाते। लेकिन सज्जनों की थोड़ी सी निष्क्रियता और उदासीनता से दुष्टों का प्रभाव बढ़ाने लगती है। फिर सज्जन बचाव का मार्ग अपनाने लगते हैं और हताश और निराश होकर सदकार्यों को छोड़ समाज को दुष्टों के भरोसे छोड़ देते हैं। दुष्टों पर नियंत्रण रखने और अपना कार्य जारी रखने के लिए कठोर और प्रभावी नीति अपनानी चाहिए।

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ।।

(अध्याय ६, श्लोक १७)

जीवन में प्रगति के लिए मन-मस्तिष्क के साथ साथ तन का स्वस्थ रहना भी जरूरी है। कोई भी कार्य शरीर के द्वारा किया जाता है। यदि शरीर अस्वस्थ है तो वह कभी भी कोई कार्य नहीं कर पाएगा। अतः शरीर साधना बेहद जरूरी है।

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मनुस्मर युद्ध च। **(अध्याय ८, श्लोक ७)**

जीवन में यदि सफलता चाहते हैं तो कर्म और लोक कल्याण में समन्वय जरूरी है। तभी जीवन का समग्र विकास हो पाएगा। दोनों में से यदि कोई एक ही कार्य करते रहें या तो लोक कल्याण या कर्म, तो दोनों ही स्थितियां कभी भी आदर्श नहीं मानी जाती। इसलिए इनमें सामंजस्य होना जरूरी है।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

(अध्याय ३, श्लोक २१)

कोई भी राष्ट्र केवल आर्थिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति से उन्नत नहीं हो जाता। जब तक कि वह आध्यात्मिक एवं नैतिक रूप से सबल नहीं हो उसकी प्रगति अधूरी है। वर्तमान में भारत के पास सब कुछ है परंतु धीरे-धीरे नैतिक और चारित्रिक बल की कमी हमें अनुभूत होने लगी है। अतः चरित्रवान बनकर आदर्श नेतृत्व प्रदान करना होगा, क्योंकि जो श्रेष्ठ पुरुष आचरण करते हैं लोग भी उनका अनुसरण करते हैं। अपने आचरण से ऐसे मूल्य स्थापित करने चाहिए जिनसे अन्य लोग प्रेरणा ले सकें।

डॉ.नवीन शर्मा
सहायक आचार्य(ज्योतिष)

राजा भोज

असि एवं मसि दोनों के धनी राजा भोज महाप्रतापी परमारवंशीय राजा सिन्धुराज एवं रानी रत्नावली के पुत्र थे। राजा भोज का शासनक्षेत्र मालवा था तथा इनके राज्य की राजधानी धारानगरी थी। ग्यारहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में राजा भोज मालवा की राजगद्दी पर सत्तासीन थे। भोज के शासनकाल में धारानगरी साक्षात् माँ सरस्वती का प्रातिष्ठान समझी जाती थी और ऐसा हो भी क्यों न ? ऐसे अनेकों प्रमाण मिले हैं जिनसे यह बात सिद्ध होती है कि राजा भोज के शासनकाल में धारा नगरी के प्रवेशद्वार केवल उसी व्यक्ति के लिए खुलते थे जो वाग्देवी का आराधक अर्थात विद्यानुरागी अथवा विद्वान हो। एक राजवंशीय होकर भी विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न था राज भोज का व्यक्तित्व।

राजा भोज ने संस्कृत की साहित्य विधा के अतिरिक्त दर्शन, इतिहास, वास्तु, ज्योतिष, आयुर्वेद, राजनीति, रत्नविज्ञान, व्याकरण, धर्मशास्त्र, संगीत, तथा योगशास्त्र आदि विषयों पर अनेकों ग्रन्थों की रचना की। एक अकेले व्यक्तित्व में इस प्रकार की सर्वतोन्मुखी प्रतिभा के दर्शन संसार में यदा कदा या यूँ कहें कि दुर्लभ होते हैं। बाल्यावस्था से ही तीक्ष्ण बुद्धि सम्पन्न राजा भोज के विषय में यह जनश्रुति प्रचलित है कि अपने जीवन के आठवें वर्ष में ही उन्हें 32 प्रकार के आयुध तथा 72 प्रकार की कलाओं का ज्ञान प्राप्त हो चुका था।

अपने चाचा मुंजराज को अपनी मृत्यु का मुख्य षडयंत्रकारी जानकर उन्हे अग्रसारित करने वाला वह श्लोक; जो उन्होनें लिखा था; वह इस तथ्य की पुष्टि करता है -

"मान्धाता स महीपतिः कृतयुगेऽलंकारभूतो गतः,
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः।
अन्ये वापि युधिष्ठिरप्रभृतयो याता दिवं भूपते,
नैकेनापि समं गता वसुमती नूनं त्वया यास्यति॥"

(अर्थात् सतयुग का अलंकार राजा मान्धाता गया, सागर पर बाँध बनाने वाला वह रावण का हन्ता कहाँ रहा, साथ ही युधिष्ठिर आदि आपसे पूर्व के राजा गये; पर यह धरती किसी के साथ नहीं गयी। पर हे राजन्! लगता है, अब यह तुम्हारे साथ अवश्य जाएगी।)

जिस समय उन्होनें उपरोक्त श्लोक लिखा था उस समय उनकी अवस्था मात्र आठ वर्ष की थी। इतनी छोटी सी अवस्था में भारतीय जीवन दर्शन की इतनी समझ होना वास्तव में विलक्षण प्रतिभा का द्योतक है।

राजा भोज के मालवाधीश बनने पर धारानगरी तो मानो श्री, धी एवं शक्ति का अधिष्ठान हो गई। विद्वानों ने मुक्त कंठ से धाराधीश की प्रशंसा करते हुए कहा-

"कविषु वादिषु योगिषु देहिषु द्रविणदेषु सतामुपकारिषु।
धनिषु धन्विषु धर्मधनेष्वपि क्षितितले न हि भोजसमो नृपः।"

(अर्थात् इस धरती पर कवियों में, वादियों में, योगियों में, देहधारियों में, दानियों में, सज्जनों के उपकारियों में, धनियों में, धन्वियों में, धर्मसम्पन्नों में भोज जैसा कोई राजा नहीं।)

राजा भोज साहित्यशास्त्र के क्षेत्र में अलंकारवादी आचार्य माने जाते हैं। इनके काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ **सरस्वतीकण्ठाभरण** तथा **श्रृंगारप्रकाश** अद्यावधि तक अलंकारशास्त्र के आधारस्तंभ स्वरूप स्मरण किए जाते हैं। सरस्वतीकंठाभरण तो अत्यंत प्राचीनकाल से ही अलंकारशास्त्रीय विद्वानों के कण्ठ का आभरण (आभूषण) रहा है। जबकि श्रृंगारप्रकाश को अब तक उपलब्ध अलंकारशास्त्रीय ग्रन्थों में सबसे विशाल ग्रन्थ माना जाता रहा है। श्रृंगारप्रकाश में मुख्यतः काव्य के आधारभूत तत्त्व अलंकारों का विस्तृत विवेचन किया गया है। स्वयं राजा भोज ने श्रृंगारप्रकाश के विषय में कहा है, "श्रृंगारप्रकाश में सारे शास्त्र तथा अर्थ सम्पत्ति का रहस्य तथा सारी कला, काव्य, औचित्य एवं कल्पना के रहस्यों का सन्निवेश दिखाई देता है।"

जहाँ तक पहले भी निर्दिष्ट किया गया है कि राजा भोज की कीर्तिलता केवल साहित्यशास्त्र तक सीमित नहीं रही। ऐसे ही विभिन्न विषयों पर उनके द्वारा लिखे अनेकों ग्रन्थ हैं; जो राजा भोज के दिवंगत हो जाने के अनेकों वर्ष बाद भी जनमानस एवं विद्वदगण के मध्य उनकी स्मृति को जीवित किये हुए हैं।

माँ सरस्वती के इस वरदपुत्र ने अपनी धारा नगरी में वाग्देवी के एक विशाल मंदिर की स्थापना भी कराई जो वर्तमान समय में भोजशाला के नाम से विख्यात है पर संभवतः रख रखाव के अभाव में उपेक्षित सा प्रतीत होता है परन्तु तत्समय तो इस मंदिर की शोभा का उल्लेख विभिन्न विद्वानों ने किया है।

भोज को मालवाधीश के रूप में पाकर धारानगरी धन्य हो गई तथा विद्वानों ने मुक्तकंठ से उनकी प्रशंसा में लिखा-

"अद्य धारा सदाधारा सदालम्बा सरस्वती।
पण्डिता मण्डिताः सर्वे भोजराजे भुवं गते॥"

(अर्थात् आज धारानगरी को श्रेष्ठ आधार मिला, सरस्वती को श्रेष्ठ आलम्बन मिला, भोज के भूपाल होने पर सारे पण्डितों को आश्रय मिला, सब सज-धज गये।)

पर यही धारा नगरी भोज की मृत्यु के उपरान्त कह उठी.

"अद्य धारा निराधारा, निरालम्बा सरस्वती।
पण्डिताः खण्डिताः सर्वे, भोजराजे दिवंगते॥"

(अर्थात् आज धारा निराश्रित हो गई, सरस्वती बेसहारा हो गई, सारे पण्डित खण्डित हो गए, भोजराज दिवंगत जो हो गया है।) राजा भोज के धाराधीश बनने से पहले पाटलिपुत्र शास्त्रपरीक्षा तथा महाकाल की नगरी उज्जैन शस्त्र परीक्षा हेतु विख्यात थी। पर धाराधीश के शासनकाल में इन दोनों विद्याओं की कसौटी का केन्द्र धारा नगरी हो गई। राजा भोज ने धारा नगरी को वो गौरव प्रदान किया, जिसके कारण इस नगरी की ख्याति कालजयी हो गई।

इतिहासकारों ने राजा भोज की महानता का वर्णन करते हुए यही कहा कि राजा भोज वास्तव में सुरक्षा, संरक्षण एवं वीरता की सांस्कृतिक पोषक थे।

डॉ. मदन मोहन तिवारी
सहायक आचार्य (वेद)

विद्यार्थि-कर्त्तव्य-पञ्चकम्

शेतां यस्समयेन शान्तमनसा शीघ्रं निशायान्तथा
शय्यां सन्त्यजतात्स्वकां प्रतिदिनं ब्राह्मे मुहूर्ते सदा।
उत्थाय स्वगुरूंस्तथा च पितरौ नौतीह यश्श्रद्धया
शिष्यश्शलाघ्यतमस्स एव विबुधैस्सम्प्रोच्यते निश्चितम्॥१॥

सन्ध्यावन्दनपूजने रतिरहो श्रृङ्गारमुक्ता वपुः
चेष्टा काकसमा तथा बकसमं ध्यानञ्च निष्ठा गुरौ।
लिप्सा यस्य सुखे धने न शयने नैव प्रपञ्चे तथा
शिष्यश्शलाघ्यतमस्स एव विबुधैस्सम्प्रोच्यते निश्चितम्॥२॥

कुर्यादध्ययनं कठोरतपसा त्यक्त्वा सुखेच्छां तथा
कामक्रोधविकारमुक्तमनसाऽऽलस्यं सदा सन्त्यजेत्।
श्रद्धाभावभरैर्विनम्रवचनैस्सर्वांश्च सम्मोहयेत्
शिष्यश्शलाघ्यतमस्स एव विबुधैस्सम्प्रोच्यते निश्चितम्॥३॥

त्यक्त्वा नैजगृहं गुरोश्च निकटं स्थित्वा च यश्श्रद्धया
वेदग्रन्थपुराणशास्त्रलसितां विद्याञ्च वा नूतनाम्।
गृह्णीयाद्गुरुसेवया प्रभरितां मत्वा गुरुं देवता
शिष्यश्शलाघ्यतमस्स एव विबुधैस्सम्प्रोच्यते निश्चितम्॥४॥

माता यस्य गुरुः पिता गुरुवरः कार्यं गुरोस्सेवनं
सद्विद्याग्रहणन्त्वहर्निशमहो लक्ष्यं गुरोस्सर्वदा।
स्वाध्यायन्न भवेत्तथा प्रमदितो यो ब्रह्मचर्ये रतः
शिष्यश्शलाघ्यतमस्स एव विबुधस्सम्प्रोच्यते निश्चितम्॥५॥

डॉ.शशिकान्ततिवारी
सहायक आचार्य (दर्शनविभाग)

गो- महिमा

अमृत पाने के लिए समुंद्र मंथन का विचार किया
देवों ने मिल सब असुरों को भी तैयार किया

मंदराचल पर्वत मथनी रूप बनाया
वसुकि नागदेव नेति के काम आया
भगवान विष्णु कच्छप अवतार धराया
हुआ मंथन विष प्याला निकला महादेव को पिलाया
विष पीकर शिव शंकर भोला नीलकंठ कहलाया
देवों ने सब मिल शिव गुणगान को गाया

पुनः देव असुरों ने अपनी मथनी चलाई
कुछ देर बाद समुंद्र से तेज कांति आई
विश्व कल्याण हेतु कामधेनु निकल आई
कामना को पूर्ति करती ऋषियों के मन भाही
तीन लोक के देवों ने गाय की महिमा गाई
जहां भी पद रखे धेनु ने वहां पर पवित्रता छाई

33 कोटि देवों ने गाय में ही वास किया
त्रेता में नंदिनी ने दिलीप के यहां उल्लास किया
द्वापर में श्रीकृष्ण ने गो संग में निवास किया
कलयुग में पंचगव्य से सब पापों का विनाश किया
जिसने की गौ सेवा उसके गुणों का विकास किया
धन्य धन्य है गौ माता जो इस धरा में प्रकाश किया

तीन लोक नौ खंड में गाय की महिमा अपरंपार है
सच्चे मन से निर्मल तन से जो करता सत्कार है
कलिकाल इस कलयुग में करती उसका उद्धार है
असाध्य रोगों पर भी पंचगव्य से होता वार है
वैतरणी भीष्म नरकों से करवाती ये पार है
हे गौमाता आपको कोटि-कोटि नमस्कार है॥

प्यारे लाल
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

प्रश्नमञ्जरी

दर्शनस्यवस्तुनिष्ठप्रश्नाः

(१) योगदर्शनस्य प्रणेता ऋषि कः ?
(क) कपिलमुनिः (ख) वाचस्पतिः (ग) पतञ्जलिः (घ) जैमिनी।
(२) सांख्यदर्शनानुसारं प्रमाणसंख्या कति ?
(क) 3 (ख) 5 (ग) 6 (घ) 2
(३) कार्यकारण सिद्धान्त किस दर्शन का सिद्धान्त है ?
(क) न्याय (ख) योग (ग) साख्य (घ) पूर्वमीमांसा
(४) पूर्वमीमांसा-दर्शनस्य प्रणेता ऋषिः कः ?
(क) जैमिनी (ख) कपिलः (ग) कणादः (घ) वादरायणः
(५) न्याय दर्शनस्प प्रणेता कः ?
(क) धन्वन्तरिः (ख) पतञ्जलिः (ग) वादरायणः (घ) गौतमः
(६) ब्रह्मसूत्रों के प्रणेता ऋषि कौन है ?
(क) व्यास (ख) ब्रह्मानन्द (ग) विश्वामित्र (घ) वादरायण
(७) सांख्य दर्शन के आद्य आचार्य ?
(क) कणाद (ख) कपिल (ग) चार्वाक (घ) शंकर
(८) शून्यतासप्ततिः के रचियता कौन है ?
(क) ईश्वर कृष्ण (ख) कल्याणरक्षित (ग) नागार्जुन (घ) वसुबन्छु।
(९) साख्यकारिका के लेखक कौन हैं ?
(क) वानभट्ट (ख) ईश्वर कृष्ण (ग) मम्मट (घ) गौतम।
(१०) भारतीय दर्शनस्य उद्गमस्थलम् ?
(क) पुराणम् (ख) वेदः (ग) रामायणम् (घ) महाभारतम्

(तृतीयङ्कस्य उत्तराणि) **(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)**

(1) त्रयः (2) पूर्णिमान्ते शराभावे शराल्पे वा (3) आर्यभट्टेन (4) भास्कराचार्येण (5) दशमभावस्य (6) सूर्यस्य (7) २० कलाः (8) मेषादौ (9) केतुभौमयोः (10) सप्त

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात।

ओउम	सर्वव्यापक
भूः	सत्यस्वरूप
भुव	चैतन्य स्वरूप /ज्ञान स्वरुप
स्वः	सुखस्वरूप
तत	वह अनन्त परमात्मा
सवितुः	सबको उत्पन्न करने वाला
वरेण्यम्	ग्रहण करने योग्य / तारीफ के काबिल
भर्गोः	सब पापों का नास करने वाला
देवस्य	प्रकाश और आनन्द देने वाले दिव्य रुप जैसे परमात्मा
धीमहि	हम सब ध्यान करते है
धियः	बुद्धियों को
यः	वह परमात्मा
नः	हमारी
प्रचोदयात	धर्मार्थ काम, मोक्ष में प्रेरणा करे, संसार से हटकर अपने स्वरूप में लगाए और शुद्ध बुद्धि प्रदान करे।

गायत्री के अक्षरों का आपसी गुंथन स्वर विज्ञान और शब्द शास्त्र के ऐसे रहस्यमय आधार पर हुआ है कि उसके उच्चारण से सूक्ष्म शरीर में छिपे हुए अनेक शक्ति केंद्र अपने आप जागृत होते है। गायत्री मंत्र का उच्चारण जिस क्रम से होता है उससे जिह्वा, दंत, कंठ, तालु, ओष्ठ, मर्धा आदि एक विशेष प्रकार से ऐसे गुप्त स्पंदन होते हैं जो विभिन्न शक्ति केन्द्रो तक पहुँच कर उनकी सुषुप्ति हटाते हुए चेतना उत्पन्न कर देते हैं। इस प्रकार जो कार्य योगी लोग बड़ी कष्ट साध्य साधनाओं और तपस्याओं से बहुत काल में पूरा करते है। वह महान कार्य बडी सरल रीति से गायत्री के जप मात्र से स्वल समय में ही पूरा हो जाता। गायत्री का एक-एक अक्षर एक-एक अक्षर धर्मशास्त्र है।

डॉ. महावीर
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

सङ्गमेश्वर महादेव

सङ्गमेश्वर महादेव मंदिर पिहोवा से 4 कि.मी दूर अरुणाय गांव में स्थित है। भोलेनाथ के इस प्राचीन मंदिर में महाशिवरात्रि पर लाखों श्रद्धालु आते ही हैं, बल्कि यहां हर महीने में आने वाले मासिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी पर भी भक्तों का तांता लगा रहता है। इसके अतिरिक्त श्रावण माह में प्रतिदिन दिनभर श्रद्धालु मंदिर में पूजा अर्चना करते हैं।

मन्दिर का इतिहास

अरुणा संगम तीर्थ (सङ्गमेश्वर महादेव मंदिर) की महिमा महाभारत, वामन-पुराण, गरूड़ पुराण, स्कंद पुराण, पद्म पुराण आदि ग्रंथों में वर्णित है। वामन-पुराण के अनुसार लोमहर्षण जी कहते हैं - राजर्षि ! विश्वामित्र तथा महात्मा वसिष्ठ के बीच में तप सम्बन्धी स्पर्धा के कारण महान् चर उत्पन्न हो गया था। वसिष्ठ ऋषि के घोर तप के कारण महर्षि विश्वामित्र की तपस्या हीन हो रही थी। तब विश्वामित्र ने सरस्वती का आह्वान करके उससे कहा मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठ को अपने तीव्र प्रवाह से बहाकर यहाँ ले आओ। मैं यहाँ उस मुनिश्रेष्ठ का निस्संदेह वध कर दूंगा। यह वचन सुनकर वह महानदी अत्यन्त व्यथित हो गई। उस महानदी को व्यथित तथा कम्पायमान देखकर क्रुद्ध विश्वामित्र ने कहा- वसिष्ठ को शीघ्र लाओ। तदनन्तर नदी श्रेष्ठ सरस्वती ने मुनि श्रेष्ठ वसिष्ठ के पास जाकर रोते हुए विश्वामित्र के उक्त वचन कहे। तब तपश्चर्या से क्षीणकाय तथा अत्यंत शोकाभिभूत उस श्रेष्ठ नदी से वसिष्ठ ने कहा- मुझे विश्वामित्र के पास ले जाओ। कृपाशील वसिष्ठ के वचन को सुनकर वह नदी उन्हें उस स्थान से अपने जलप्रवाह के द्वारा बहाकर ले चली। तब किनारों का अतिक्रमण करके बहती हुई नदी के द्वारा ले जाए जाते हुए वसिष्ट ने देवी सरस्वती की वंदना की।

पितामहस्य सरसः प्रवृत्ताऽसि सरस्वती। व्याप्त त्वया जगत्सर्वं तवैवाम्भोभिरुत्तमैः॥
त्वमेवाकाशगा देवी मेघेषु सृजसे पयः। सर्वास्त्वापस्त्वमेवेति त्वत्तो वयमधीमहे॥
पुष्टिर्धृतिस्तथा कीर्तिः सिद्धिः कान्तिः क्षमा तथा। स्वधा स्वाहा तथा वाणी तवायत्तमिदं जगत्॥
त्वमेव सर्वभूतेषु वाणीरूपेण संस्थिता॥ 40 (13-16)॥

हे सरस्वती। आप पितामह ब्रह्मा के सरोवर मे उद्भूत हैं। आपके जल से यह समस्त जल आप्लावित है। हे देवी ! तुम्हीं आकाशगामी होकर मेघों में जल उत्पन्न करती हो। समस्त जल आप ही हो। आप से ही हम अध्ययन करते हैं। आप ही पुष्टि, धैर्य, कीर्ति, सिद्धि, कान्ति, क्षमा, स्वधा, स्वाहा तथा वाणी हो यह सब जगत् आपसे ही व्याप्त है। आप ही समस्त प्राणियों में वाणीरूप में प्रतिष्ठित हो।

इस प्रकार वसिष्ठ द्वारा पूजित देवी सरस्वती उन ब्राह्मण (वसिष्ठ) को सुखपूर्वक विश्वामित्र के आश्रम की ओर बहाकर ले गई और इस प्रकार दुःखी सरस्वती ने वसिष्ठ को विश्वामित्र के लिए सौंप दिया। तब ऋषि विश्वामित्र ने मां सरस्वती की सहायता से ऋषि वशिष्ठ को मारने के लिए शस्त्र उठाया, तभी मां सरस्वती ऋषि वशिष्ट को वापस बहा कर ले गई। तब ऋषि विश्वामित्र ने देवी सरस्वती को रक्त व पींप सहित बहने का श्राप दिया। विश्वामित्र के इस श्राप से मुक्ति पाने के लिए मां सरस्वती ने भगवान शंकर की तपस्या की। भगवान शिव के आशीर्वाद से प्रेरित 88 हजार ऋषियों ने यज्ञ द्वारा अरूणा नदी व सरस्वती का संगम कराया। इसके बाद देवी सरस्वती को श्राप से मुक्ति मिली थी। माना जाता है नदियों के संगम से भगवान शंकर सङ्गमेश्वर महादेव के नाम से विश्व में प्रसिद्ध हुए।

सङ्गमेश्वर महादेव मंदिर में स्वयंभू शिवलिंग हैं, जोकि ऋषि मुनियों की कठोर तपस्या के फल स्वरूप धरती से प्रकट हुए हैं। मान्यता है कि श्रावण माह में भगवान शिव का धरती पर वास होता है, इसलिए इस महीने में यहां भक्तों का जमावड़ा देखने को मिलता है। श्रद्धालुओं का कहना है कि श्रावण माह में स्वयंभू शिवलिंग पर जलाभिषेक करने से मनुष्य की सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

आचार्य दीपककौशिकः
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

त्यागाच्छान्तिः

अखिलसंसारे बाह्यिकतया यत्किमपि वस्तु दृश्यते तत्सर्वं मायया सृष्टं वर्तते। मायाकार्यं तत् इत्यतः सर्वम् अनित्यं स्यात्। परन्तु एकः सच्चिदानन्दस्वरूपः परमात्मा हि सर्वत्र समभावेन परिपूर्णो वर्तते इति सुसूक्ष्मदृष्ट्या विचार्य शरीरेण सह संसारस्य मायागतेषु समस्तवस्तुषु कर्मसु च स्थितायाः सूक्ष्मवासनायाः यः सर्वथा अभावः, सः त्यागः कथ्यते। मनुष्यस्य अन्तःकरणे यदा अवगुणानाम् अभावः, त्यागभावो वा सम्भवेत् तदा हि सद्गुणानाम् आविर्भावो भवति। तदा स्वयमेव अहिंसा, सत्यं, अस्तेयः, ब्रह्मचर्यं, अपैशुनता, लज्जा, अमानित्वं, निष्कपटता, शौचं, सन्तोषः, तितिक्षा, सत्सङ्गः, सेवा, यज्ञः, दानं, तपः, कर्म, स्वाध्यायः, शमः, दमः, विनयः, आर्जवं, दया, श्रद्धा, विवेकः, वैराग्यं, एकान्तवासः, अपरिग्रहः, समाधानं, उपरामता, तेजः, क्षमा, धैर्यं, अद्रोहः, अभयं, निरहङ्कारता, शान्तिः, ईश्वरे अनन्या भक्तिः इत्यादिनानासद्गुणानां आविर्भावः स्वभावेन हि भवति।

अतो मायाकृतेषु वस्तुषु या वासना, सा हि मनुष्यस्य नानादुःखक्लेशबन्धनादीनां कारणीभूता भवति, इत्यतः काल्याणकामिभिः सा सर्वदा हेया हि स्यात्। 'त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्' इति गीतोक्तिः। विना त्यागं परमा भक्तिः शान्तिश्च दुष्प्राप्या सर्वथेति कथनस्याशयः। शुभम्।

अनिल शास्त्री
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

छात्र वीथिका

गीता सुगीता कर्तव्या

अयमात्माजरोऽमरश्चास्ति।
नायं जायते न च म्रियते।
केनापि प्रकारेण नायं नाशं प्राप्नोति।
यथा जीर्णवस्त्रमुत्तार्य नवं वस्त्रं धार्यते, तथैव नवशरीरधारणमस्ति॥

सर्वैः मनुष्यैः सदा स्वकर्म पालनीयम्।
स्वधर्मो न कदाचिदपि त्याज्यः।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः॥

शुभाशुभकर्मणः कदापि नाशो न भवति।
शुभं कर्म सदा भयात् जायते।
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति, प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पप्यस्य धर्मस्य, बायते महतो भयात्॥

उपसंहार
गीतायां ये उपदेशा दत्ताः सन्ति, ते सर्व एव जीवनस्योतिकारकाः।
गीताया उपदेशानकला आचरणं कत्वा सर्वैरपि स्वजीवनमुन्नतं कर्तव्यम्।
एतदर्थ गीतायाः पठन पाठनं चापि कार्यम्।
"गीता सुगीता कर्तव्या"इति।

नीलम
(आचार्य द्वितीय वर्ष)

गीताया उपदेशामृतम्

श्रीमद्भगवदगीता समस्तसंसारे विख्याता। संसारस्य अधिकांशभाषासु अस्या अनुवादाः सम्पन्नाः। सप्तशतलोकात्मके अस्मिन् लघुग्रन्थे सकलमानवतायै शान्तिसन्देशाः प्रदत्ताः। वस्तुतः गीतायां कृष्णार्जुनसंवादमाध्यमेन वेदानाम्। उपनिषदां च ज्ञानस्य सारः संगृहीतः।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः। पार्थो वत्सः सुधीभोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्। महाभारते यदा युद्धभूमौ अर्जुनः सम्मुखमेव रणाय समुद्यतानां धृतराष्ट्रपुत्राणां दुर्योधनादीनां सेनां पश्यति तदा तैः भ्रातृभिः अन्यैः सम्बन्धिभिश्च सह असौ योद्धुं नेच्छति। तस्य मनसि मोहः जायते। तदा तस्य रथस्य सारथिरूपेण स्थितः महान् नीतिज्ञः योगीश्वरः श्रीकृष्णः तम् उद्बोधयति युद्धाय च प्रेरयति। सः कथयति यत् मनुष्येण फलस्य चिन्तां न कृत्वा कार्यं कर्त्तव्यम्। सर्वे जनाः एकस्मिन् दिवसे निश्चितम् आयुः यापयित्वा अवश्यमेव मरिष्यन्ति। परन्तु तदा केवलं तेषां शरीरं नश्यति, आत्मा तु अजरः, अमरः अस्ति, स न नश्यति। अतः एतेषां बन्धुनां नाशविषये भयाने कर्त्तव्यः। यैः शरीरैरेत भान उत्पीडयन्ति कपटाचरणं च कुर्वन्ति। तेषां नाशः आवश्यकः अस्ति। अतः अस्मिन् युद्धे युद्ध कर्तव्यमेव। अनेन भगवतः कृष्णस्योपदेर्शेन अर्जुनः ज्ञानं प्राप्य मोहं त्यक्त्वा युद्धाय कृतनिश्चयः अभवत्। श्रीमद्भगवद्गीता निष्कामकर्मणः उपदेशं ददाति, निर्भीकतां च शिक्षयति। आत्मनः अजरत्वम् अमरत्वम्, व्याप्ति, सर्वभूतान्तर्यमित्वं च उपदिश्य मनुष्यं त्यागमार्गं दर्शयति। गीतायां सन्यासस्य, कर्मणः, ज्ञानस्य भक्तेश्चापूर्वः समन्वयः लक्ष्यते। अयं समन्वयः एव भारतीयसंस्कृतेः दर्शनस्य विचारधारायाश्च प्रतीकं वक्तुं शक्यते। गीतायाः सन्देशः विश्वबन्धुत्वस्य, विश्वशान्तेः सन्देशः, आदर्शमानवस्य च सन्देशः।

गीतायाः सारः अस्मिन् श्लोके वर्तते-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

विनय
(शास्त्री तृतीय वर्ष)

मेरा हिन्दुस्तान

हर जन में है देशभक्ति का खून, ना कोई हैवान हैं।
बहती नदियां, बहते नाले, चलते झरने इसकी शान है।
हर कोई मर-मिटने को तैयार, सबका दिलोंजान हैं।
यहां के जन प्यारे, जनता प्यारी यही इसकी पहचान है।
मुल्क है मेरा हिन्दुस्तान, जन-जन का हिन्दुस्तान है॥१॥

हिन्दु एकत्व है हर जन का नारा, एकता इसकी शान हैं।
हर दीवाना, हर परवाना सबकी जुबां पर इसका नाम हैं।
राम, रहीम, अल्लाह, ईश्वर सबका यहां पर नाम हैं।
अनुपम यहां का रूप सौन्दर्य, अद्भुत इसकी शान है।
मुल्क है मेरा हिन्दुस्तान, जन-जन का दिलोंस्तान है॥२॥

सरहद पर लहते वीर, हर दिन होता बलिदान है।
हर कोई करता प्यार, मेरा यह देश महान है॥
हर कोई करता प्यार, मेरा यह देश महान है।
यहां की वादियां जन्नत, जन्नत में भी जहान है।
पर्वत, पहाड़, वादियों में बंसती सांसे इसकी पहचान है।
मुल्क है मेरा हिन्दुस्तान, जन-जन का दिलोंस्तान हैं॥३॥

हर जन के सीने में रहती यादें, महापुरूषों का नाम है।
जन्म-जन्मांतर इसकी महानता, महानता इसकी शान हैं।
हर जवान हैं आशिक-ए-वतन, वतन हमारा बेमिसाल हैं।
खून से सींचा है, वीरों ने इसको, मातृभूमि इसकी शान हैं।
मुल्क है मेरा हिन्दुस्तान, जन-जन का दिलोंस्तान है॥४॥

मोहित
(धर्मशास्त्र आचार्य प्रथम वर्ष)

ममं विश्वविद्यालयः

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः मौनधारा कपिष्ठलं मम विश्वविद्यालयोऽस्ति। मम विश्वविद्यालयस्य निर्माणं तु मौनधारायां भविष्यति परम् अधुना डॉ. भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालये कक्षाः सुचारू रूपेण भवन्ति। भारतस्य समृद्धहरियाणाया राज्यस्य कैथलजनपदस्य मून्दड़ी ग्रामे हरियाणासर्वकारेण 20-20-2018 अधिनियमानुसारेण महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः अस्ति। मम विश्वविद्यालये बहवः गुरवः सन्ति। ते अस्मान् बहु सम्यक् रूपेण पाठयन्ति। ते सर्वे सदाचारिणः सुयोग्याः महान्तः विद्वांसः च सन्ति। मम विश्वविद्यालये भिन्न-भिन्न कार्यक्रमाः भवन्ति। कार्यक्रम सांस्कृतिक गतिविधयः, संस्कृतगीतं, श्लोकगायनम् इत्यादयः भवन्ति। मम विश्वविद्यालये कार्यक्रमस्य शुभावसरे आद्यौ सरस्वती पूजनं भवति। सरस्वती पूजने वयं सर्वे सरस्वती वन्दना मनोयोगेन कुर्मः। मम विश्वविद्यालये यज्ञस्य अनुष्ठानं अपि भवति। मम विश्वविद्यालये प्रतिदिनं नववादने संस्कृते प्रार्थना भवति। संस्कृतप्रार्थनायां सङ्कल्पः सरस्वती वन्दना, कुलगीतं, शान्तिपाठः, कल्याणमन्त्रः, एकतामन्त्रः, पञ्चाङ्गं, घोषंश्च भवन्ति। मम विश्वविद्यालयस्य कुलगीतम् इत्थम् अस्ति-

ग्रामे नगरे समस्तराष्ट्रे, रचयेम संस्कृतभवनम्
इष्टिकां विना मृत्तिकां विना केवल सम्भाषणविधया सम्भाषणकलया॥

मम विश्वविद्यालये संस्कृत पुस्तकालयः अस्ति। मम विश्वविद्यालये शास्त्री, आचार्य, डिप्लोमा (प्रमाण-पत्र) च कक्षाः भवन्ति। मम विश्वविद्यालये शास्त्री, आचार्य, डिप्लोमा कक्षासु संस्कृतपत्रकारिता, व्याकरणं, साहित्यं, दर्शनं, ज्योतिष, वेद, धर्मशास्त्र, पुराणेतिहासं, हिन्दूअध्ययनं तथा च योगशास्त्रे आयुर्वेदशास्त्रे द्विवर्षीय प्रमाणपत्रमपि प्रदीयते। कक्षायां उपरियुक्ताः सर्वे विषयाः वयं आचार्येण सह धैर्येण, निष्ठया, एकाग्र मनसा च पठामः। मम विश्वविद्यालयः भविष्यतकाले निश्चितरूपेण उन्नतिं प्राप्स्यति। आगच्छन्तु युवानः भारतीयसंस्कृतेन संस्कृतभाषायाश्च रक्षणाय प्रचाराय च अस्मिन् विश्वविद्यालये पञ्जीकरणं कुर्वन्तु।

जयतु संस्कृतं, जयतु भारतम्

कुसुम
(शास्त्री तृतीय वर्ष)

भारत विश्वगुरू

भारत विश्वगुरू है हमें कोई कुछ नहीं सीखा सकता। मैनें सर्वप्रथम यह उक्ति हरिशंकर परसाई जी के मुख से दूरदर्शन पर सुनी थी बचपन में मुझे भारत के बारे में ये गर्वोक्ति सुनकर बहुत अच्छा लगता है कि मैं भी भारतीय हूं। ये उक्ति मुझे बहुत अच्छी लगती है और जहां मौका मिले कह देती हूं। भारत विश्वगुरू ऐसे ही नहीं है। अनेकों ऐसे कारण रहें है जिनसे यह सिद्ध हो जाता है कि भारत सच में विश्वगुरू है। उन अनेकों कारणों में सर्वप्रथम संस्कृतभाषा का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। संस्कृतभाषा ने सम्पूर्ण विश्व को बोलना सिखाया है अगर कहे तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। संस्कृत समस्त भाषाओं की जननी है। युरोप की भाषाएं संस्कृत से ही बनी है। लेटिन व ग्रीक जिसे सबसे पुरानी भाषा कहा जाता है। अधिकतर शब्द संस्कृत के ही है जैसे संस्कृत के पित्र, पिता शब्द को लेटिन में पतर व ग्रीक में पातर कहा जाता है। संस्कृत के मातृ माता शब्द का भी लेटिन में मातर व ग्रीक में मितर हो जाता है ऐसे ही अनेकों शब्द है जिनका संस्कृत शब्दों में मेल दिखता है। जिससे यह सिद्ध होता है कि युरोप को बोलना भी भारत ने सिखाया है। थाईलैण्ड को थाय प्रतेत बोलते है प्रतेत शब्द संस्कृत के प्रदेश शब्द से आया है। थाईलैण्ड का थाय भाषा भी पूरी तरह संस्कृत पर आधारित रही है। सिंगापुर का पूर्ण नाम सिँह पुरा है जिसका अर्थ सिंहो का शहर है। सीरिया से संस्कृत का 14वीं शताब्दी ई.पू. का बोगाजकोई अभिलेख मिला है जो मित्तनी साम्राज्य के बारे में बताता है कि मित्तानी साम्राज्य के राजाओं का नाम हिन्दु संस्कृत देवताओं के नाम पर रखे जाते थे जैसे राम, दशरथ, इन्द्र, वरूण आदि। उत्तरी इराक व सीरिया क्षेत्र में फैले हुए सम्राज्य की राजधानी वासुखनी थी जो एक संस्कृत का शब्द है। ऐसे ही अनेक साक्ष्य है जो विश्व में संस्कृत के अस्तित्त्व की जानकारी देती है और भारत के विश्वगुरू बनने में संस्कृत के महत्त्वपूर्ण योगदान को भी दर्शाते है। वर्तमान में संस्कृत भाषा की छाप विश्व पटल पर विख्यात हो रही है। वह समय भी दूर नहीं जब सम्पूर्ण विश्व भी यही उक्ति दोहराएगा। जयतु संस्कृतं जयतु भारतम् भारत विश्वगुरू है।

अमनदीप
आचार्य साहित्य द्वितीय वर्ष

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दड़ी), कपिष्ठलम् (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम 20/2018 द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी के धारा 2(F) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

प्रशासनिक अधिकारी

क्रम	नाम	पद	दूरभाष नं.	ई- मेल आई. डी.
1	प्रो. राजकुमार मित्तल	कुलपति	01746 297250	vc@mvsumktl.ac.in
2	प्रो. यशवीर सिंह	कुलसचिव	01746 297260	registrar@mvsumktl.ac.in
3	डॉ. रवि भूषण गर्ग	उप-कुलसचिव	8708662719	ravibhushan9@gmail.com
4	श्री सुशील कुमार	वित्त अधिकारी	8168583080	finmvsu@gmail.com
	अधीक्षक			
1	श्री सुभाष चन्द	शैक्षणिक/परीक्षा/क्रय	9416586115	subhasgillju@gmail.com
2	श्री दर्शन कौशिक	प्रशासन/विवित	9467834577	
	शैक्षणिक			
1	डॉ. जगतनारायण कौशिक	अधिष्ठाता. साहित्य, संस्कृति संकाय	9996041064	jagatkuk@gmail.com
2	डॉ. सुरेन्द्र पाल वत्स	अधिष्ठाता, वेद वेदांग संकाय	9896335373	surendervats1974@gmail.com
3	डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय	निदेशक, शोध एवं प्रकाशन विभाग	9810373278	krishanpandey1967@gmail.com
4	डॉ. रामानन्द मिश्र	छात्रावास संरक्षक	7355115414	ramachd91@gmail.com
5	डॉ. शशिकान्त तिवारी	जनसम्पर्क अधिकारी	9889123124	shashikanttiwari1986bhu@gmail.com
6	डॉ. नरेश शर्मा	नोडल अधिकारी	7082811234	nareshdutt82@gmail.com
7	डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र	पुस्तकालयाध्यक्ष	7631274367	akhimishra111@gmail.com
8	डॉ. शर्मिला	महिला छात्रावास संरक्षिका	9254640788	omsharmila88@gmail.com
9	डॉ. शीतांशु त्रिपाठी	सहायक आचार्य (साहित्य) (अनुबन्ध)	8989713948	sheetanshu1972@gmail.com
10	डॉ. नवीन शर्मा	सहायक आचार्य(ज्योतिष) (अनुबन्ध)	9650834736	astronaveen1983@gmail.com
11	डॉ. मदन मोहन तिवारी	सहायक आचार्य (वेद) (अनुबन्ध)	8586806121	madanmohantiwari30@gmail.com
12	डॉ. विनय गोपाल त्रिपाठी	सहायक आचार्य (दर्शन) (अनुबन्ध)	8076723202	tvinaygopal192@gmail.com